उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 1

आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.......1
हमारा असमंजस.......1
असमंजस के स्रोत.......2
भविष्यवाणी की पुस्तकें.......2
कलीसिया.......2
असमंजस के परिणाम.......2
अत्याचार.......2
उदासीनता.......3
भविष्यवक्ताओं का अनुभव.......4
मानसिक दशा.......4
प्रेरणा.......5
यांत्रिक प्रेरणा.......5
सचेत प्रेरणा.......5
समझना.......5
मूल अर्थ.......6
प्रचलित व्याख्या.......6
परमाणविक.......7
गैरऐतिहासिक.......7
सही व्याख्या.......7
साहित्यिक संदर्भ.......8
ऐतिहासिक संदर्भ.......8
नए नियम के दृष्टिकोण.......9
अधिकार.......9
भविष्यवक्ताओं के लेख.......9
भविष्यवाणिय अभिप्राय.......9
प्रयोग.......11
भविष्यवाणिय अपेक्षाएं.......11
भविष्यवाणिय पूर्णता.......11
उपसंहार.......12

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय एक

आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण

परिचय

मेरा एक मित्र है जिसने मुझसे एक बार कहा, "रिचर्ड अगर तुझे एक बड़ी कलीसिया चाहिए तो तुझे बाइबल से भविष्यवाणी पर आधारित एक सम्मेलन का आयोजन करके सबको यह बता देना चाहिए कि यीशु शीघ्र ही वापिस आ रहे हैं।" और जब मैं मसीही पुस्तकों की दुकानों और मसीही टेलीविजन को ध्यान से देखता हूँ तो पाता हूँ कि वह ठीक ही कह रहा है। बहुत से लोग भविष्यवाणी के प्रति उत्साहित रहते हैं क्योंकि वे इस बात से आश्वस्त हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने उन्हें बताया है कि यीशु शीघ्र ही वापिस आ रहे हैं।

अधिकांश मसीही पुराने नियम की भविष्यवाणी पर ज्यादा ध्यान नहीं देते, परन्तु जब वे थोड़ा बहुत ध्यान देते हैं, तो उनका ध्यान एकदम से मसीह के द्वितीय आगमन और संसार के अंत में होने वाली घटनाओं पर चला जाता है। भिन्न-भिन्न संप्रदायों के मसीही अगुवे लोगों को उत्साहित करते हैं कि वे इन विषयों को भविष्यवाणिय लेखनों के हर पृष्ठ पर देखें। यद्यपि हमारा ध्यान स्वाभाविक रूप से इन विषयों की ओर चला जाता है, परन्तु इन अध्यायों में हम पुराने नियम के एक और भी अधिक गंभीर दृष्टिकोण पर नजर डालेंगे- वह दृष्टिकोण जो स्वयं भविष्यवक्ताओं ने लिया था। और जब हम ऐसा करते हैं, हम यह पाएंगे कि भविष्यवक्ताओं के पास कहने के लिए हमारे विचारों से कहीं बढ़कर था।

हमने इस अध्याय का नाम "आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण" दिया है क्योंकि हम ऐसे व्याख्यात्मक विचारों को ढूँढ़ेंगे जिन्हें हम सबको समझना जरूरी है यदि हम बाइबल की भविष्यवाणी को समझना चाहते हैं। आरंभिक अध्याय चार भागों में विभाजित है : पुराने नियम की भविष्यवाणी के प्रति हमारा असमंजस, और फिर हम तीन बिन्दुओं को देखेंगे जो हमें इस असमंजस से बाहर निकालेंगे, वे हैं- भविष्यवक्ता के अनुभव की प्रकृति, मूल अर्थ को खोजने का महत्व और अंत में, पुराने नियम की भविष्यवाणी पर नए नियम के दृष्टिकोण। आइए पहले हम हमारे असमंजस पर ध्यान दें।

हमारा असमंजस

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि किस प्रकार अधिकांश मसीही बाइबल के कुछ भागों को दूसरे भागों से अधिक अच्छी तरह से जानते हैं। पुराने नियम में पहली पांच पुस्तकों की कहानियां बहुत परिचित हैं। उत्साहित बाइबल पाठक यहोशू और न्यायियों की पुस्तकों को जानते हैं, और कुछ विश्वासी शमूएल, राजाओं और इतिहास की पुस्तकों के विषय में बहुत कुछ समझते हैं। परन्तु जैसे ही कोई पूछता है, "यशायाह की पुस्तक किस विषय में है?" या "सपन्याह के विषय में तुम्हें क्या पता है?" "क्या हाग्गै रोमांचक पुस्तक नहीं है?" तब हम हक्के-बक्के रह जाते हैं क्योंकि हमें इन पुस्तकों के विषय में बहुत ही कम पता होता है। पासवान और अन्य मसीही शिक्षक भी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के चौकस स्पष्टीकरण को नजरअंदाज करते हैं क्योंकि वे बाइबल के इस भाग के प्रति काफी असमंजस में रहते हैं।

जब हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के इस अध्ययन को आरंभ करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम पहले हमारे असमंजस पर ध्यान दें। हम दो मूलभूत प्रश्न पूछेंगे : हमारे असमंजस के स्रोत क्या हैं और इस असमंजस के कुछ परिणाम क्या हैं? आइए हम असमंजस के उन स्रोतों की ओर देखें जो हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के प्रति अनुभव करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

असमंजस के स्रोत

कम से कम दो ऐसी बातें हैं जो पवित्रशास्त्र के इस भाग के प्रति मसीहियों के लिए मुश्किलें उत्पन्न करती हैं। पहली, स्वयं भविष्यवाणी की पुस्तकें, और दूसरी कलीसिया में असामंजस्य।

भविष्यवाणी की पुस्तकें

आइए हम इसका सामना करें। पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली भविष्यवाणी की पुस्तकें शायद समझने के लिए बाइबल के सबसे मुश्किल भाग हैं। अधिकांश मसीहियों को कुछ भविष्यवक्ताओं के नाम का उच्चारण करने में भी मुश्किल होती है, समझने की तो बात ही अलग है। उनकी पुस्तकों की विषय-वस्तु से हम प्राय: विचलित हो जाते हैं। वे असंबद्ध प्रतीत होती हैं; एक पद दूसरे पद की ओर ले जाता नहीं लगता। और भविष्यवक्ता पहेलियों और मुहावरों में बात करते प्रतीत होते हैं, और कभी-कभी तो हमें उनकी बातों का अर्थ ही समझ में नहीं आता।

और केवल इतना ही नहीं, हमें तो बाइबल के इस समय की ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में भी ज्यादा कुछ पता नहीं है। राजा, राष्ट्र, युद्ध और अन्य घटनाएं इतनी जटिल हैं कि उन्हें समझ पाना हमारे लिए बहुत ही मुश्किल होता है। जब अधिकांश मसीही पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं, तो वे ऐसे अनुभव करते हैं जैसे कि वे किसी अजनबी, और गैर देश में आ गए हैं। सड़कों पर लगे चिन्ह उन्हें समझ नहीं आते। रीति-रिवाज विचित्र लगते हैं। और भविष्यवाणी की पुस्तकों द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं के कारण हम हक्के-बक्के होकर घूमते रहते हैं।

कलीसिया

हमारे असमंजस का दूसरा बड़ा स्रोत है कलीसिया। मसीही कलीसिया अनेक क्षेत्रों में शिक्षण की अद्‌भुत सामंजस्यता रखती है। परन्तु जब पुराने नियम की भविष्यवाणी की व्याख्या करने की बात आती है, तो इसमें सामंजस्य नहीं परन्तु असहमति ही दिखाई देती है। आपने यह वाद-विवाद तो सुना ही होगा- तुम क्या हो? एक पूर्वसहस्त्राब्दी विधानवादी? तुम किसमें विश्वास करते हो, कष्टों से पहले बादलों पर उठाए जाने में या कष्टों के बीच बादलों पर उठाए जाने में या फिर कष्टों के पश्चात् बादलों पर उठाए जाने में? सहस्त्राबदीओत्तर या ऐतिहासिक पूर्वसहस्त्राब्दी वादी बनने में आपकी क्या राय है? या आप एक निराशावादी हो या आशावादी गैरसहस्त्राब्दीवादी? हम एक संप्रदाय में जाते हैं और सोचते हैं कि बाकी सब गलत हैं। फिर हम दूसरे समूह में जाते हैं और उसका ठीक उल्टा सुनते हैं। यद्यपि सुसमाचारवादी विश्वास के मूल तत्वों पर सहमत होते हैं, परन्तु जब भविष्यवाणी की बात आती है तो हम में मुश्किल से ही कोई सहमति पाई जाती है। भविष्यवक्ताओं की व्याख्या पर कलीसिया इतनी विभाजित रही है कि इन लेखनों को आत्मविश्वास के साथ पढ़ना हमारे लिए मुश्किल हो जाता है।

असमंजस के परिणाम

हम अनुभव करते हैं कि इस गहन असमंजस ने हमें खेदजनक परिणामों की ओर धकेल दिया है। बाइबल के इस भाग से होने वाले असमंजस से मैं कम से कम दो मुख्य परिणामों को देख सकता हूँ : अत्याचार और उदासीनता।

अत्याचार

अत्याचार हमारे चारों ओर होता है। इसमें काफी असहमति और असमंजस पाया जाता है कि तथाकथित “भविष्यवाणी विशेषज्ञ” असमंजस को व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं। वे इधर-उधर घूम कर लोगों को अपने मत सिखाने के द्वारा ऐसा करते हैं जैसे कि वे पूरी तरह से आश्वस्त हों।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अत्याचार के ऐसे कई उदाहरण मेरे मन में आते हैं। हाल ही के दशकों में अनेक पुस्तकों और शिक्षकों ने कहा है कि 1948 में इस्राएल की स्थापना ने मसीह के पुनरागमन से पहले की अंतिम पीढ़ी को चिन्हित किया है। विशाल पहलू पर यह सिखाया गया कि मसीह को 1948 के बाद की पहली चालीस वर्षों की पीढ़ी के भीतर वापिस आना जरूरी है- "इस्राएल के बाद की केवल एक पीढ़ी अपनी भूमि पर लौटती है, बाइबल कहती है चालीस वर्ष, और फिर मसीह अपनी कलीसिया के लिए लौट आएगा।"

चालीस वर्ष तो बीत गए परन्तु कुछ नहीं हुआ। हम आशा कर रहे होंगे कि 1988 के गुजर जाने के बाद ऐसे कयास बंद हो गए होंगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, भविष्यवाणी के विशेषज्ञों ने अपना ध्यान दूसरी ओर लगा लिया। अब वे दावा करते हैं कि वर्ष 2000 हमें अंत समय के आरंभ की ओर लेकर जाएगा। उम्मीदें फिर से बढ़ गईं। पत्रिकाएं और समाचार पत्र भी हमें बताते हैं कि अंत समय बिल्कुल निकट है; सारे चिन्ह अंत समय को दर्शा रहे हैं। वे हमें बताते हैं कि हरेक नई घटना, हरेक युद्ध, हरेक भूकंप, हरेक आर्थिक समस्या दर्शाती है कि मसीह के पुनरागमन की पुराने नियम की भविष्यवाणियां पूरी होने वाली हैं। और निस्संदेह इन अनेक भविष्यवाणिय सम्मेलनों का व्यावहारिक अर्थ यह होता है : "मेरी पुस्तकें खरीदो।" "मेरी सेवकाई को पैसा दो।" दुर्भाग्यवश, इन तथाकथित "विशेषज्ञों" के द्वारा मसीहियों का आसानी से शोषण किया जाता है। हम में से अनेक लोग एक व्याख्या से दूसरी व्याख्या की ओर घूमते रहते हैं क्योंकि हमें स्वयं नहीं पता कि हम भविष्यवक्ताओं को कैसे समझें।

उदासीनता

पुराने नियम की भविष्यवाणी के विषय में अत्याचार हमारे असमंजस का केवल एक परिणाम था। एक और परिणाम भी है जो हम देख सकते हैं। कई बार हम बाइबल के इस भाग को समझने में उदासीन हो जाते हैं। कई मसीही भविष्यवाणी के प्रति अपनी धारणा में कई चरणों से होकर गुजरते प्रतीत होते हैं। पहले पहल तो वे बड़े उत्साह के साथ आरंभ करते हैं। वे किसी की शिक्षा को सुनते हैं और वे सम्मेलनों में जाने और भविष्यवक्ताओं के बारे में पुस्तकों को पढ़ने में बहुत उत्साहित हो जाते हैं। परन्तु अगली बात आप यह पाते हैं कि ये विश्वासी स्वयं को मुश्किल में पाते हैं क्योंकि उनके शिक्षकों ने उन्हें वे बातें बता दीं जो बाद में सत्य प्रमाणित नहीं होतीं। और कई विषयों में वही मसीही अंत में स्वयं को उदासीन पाते हैं। और वे बाइबल के इस भाग को समझने में हार मान लेते हैं।

जब मैं दसवीं कक्षा में था तो मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था। मैं एक नया मसीही था और मेरे सारे शिक्षकों ने मुझसे कहा था, "रिचर्ड, यीशु बहुत शीघ्र वापिस आ रहे हैं।" इसलिए मैंने कॉलेज जाने तक के विचार को त्याग दिया था। सौभाग्य से बहुत जल्द ही मुझे पता लग गया कि वे गलत थे और फिर मैंने अपने लिए अपनी जिन्दगी को बनाया। परन्तु मैं पुराने नियम की भविष्यवाणी के प्रति बहुत ही उदासीन हो गया। मैंने अपने आप में सोचा, "मैं बाइबल के इस भाग को नहीं समझ सकता। इसलिए मुझे केवल उन्हीं भागों को समझना चाहिए जो मैं समझ सकता हूँ।" और मैं आपको बता दूँ, जहां कहीं मैं जाता हूँ, मैं उन मसीहियों को देखता हूँ जो पुराने नियम की भविष्यवाणी के प्रति उदासीन हैं।

मुझे डर है कि आज अनेक विश्वासी पुराने नियम की भविष्यवाणी के प्रति उदासीन हैं। वे बाइबल के इस भाग को समझने का प्रयास करने में हार मान लेते हैं क्योंकि वे बार-बार निराश होकर थक चुके हैं और वे अत्याचार को सहते हुए थक चुके हैं। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि मैंने कितने पासवानों को यह कहते हुए सुना है, "भविष्यवाणी के विषय में चिंता मत करो। वैसे भी आप इसे कभी नहीं समझ पाओगे।" अतः हम बाइबल के इस भाग के विषय में भूल जाते हैं।

अब यह समय इस स्थिति को परिवर्तित करने का है। हमें पुराने नियम की भविष्यवाणी को सीखने की जरूरत है ताकि "हर प्रकार की धर्मशिक्षा" के द्वारा हम पर अत्याचार न हो। परन्तु हमें भविष्यवाणी को सीखने की आवश्यकता भी है ताकि हम उदासीनता को दूर कर सकें। परमेश्वर ने

बाइबल में भविष्यवाणी इसलिए शामिल नहीं की कि हम इसे नजरअंदाज कर दें। उसने हमें पवित्रशास्त्र का यह भाग इसलिए दिया ताकि हम अनेक तरीकों से इससे लाभ प्राप्त कर सकें और इसलिए हम भविष्यवाणी के विषय में अनजान या असमंजस में रहकर ही संतुष्ट न हो जाएं।

मैं सोचता हूँ कि हम सब पुराने नियम की भविष्यवाणियों के साथ इन समस्याओं को पहचानते हैं, परन्तु अब हमें दूसरा प्रश्न पूछना है। इन समस्याओं से निदान पाने के लिए और पुराने नियम की भविष्यवाणियों के बारे में हमारे ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए हमें किस प्रकार की बातों को समझने की जरूरत है? अत्याचार और उदासीनता को दूर करने के लिए कम से कम तीन ऐसे विषय हैं जिनको हमें स्पष्ट करना है। हमें भविष्यवक्ता के अनुभव की प्रकृति को सीखने की जरूरत है, और हमें भविष्यवाणियों के मूल अर्थ के महत्व की भी पुन: पुष्टि करनी भी जरूरी है। और हमें इस बात की भी बेहतर समझ प्राप्त करनी है कि नया नियम पुराने नियम की भविष्यवाणियों का प्रयोग किस प्रकार करता है। ये विषय इतने महत्वपूर्ण हैं कि हम इन सारे अध्यायों में इन विषयों पर चर्चा करेंगे। इस बिंदू पर हम केवल कुछ आरंभिक विषयों को आपके समक्ष रखेंगे।

भविष्यवक्ताओं का अनुभव

आइए पहले हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अनुभव पर ध्यान दें। यदि हम कभी पुराने नियम की भविष्यवाणी को और अधिक जिम्मेदारी के साथ समझने की आशा करते हैं तो हमें भविष्यवक्ताओं के अनुभव को ध्यान से देखने की आवश्यकता है। परमेश्वर के इन संदेशवाहकों के साथ क्या हुआ था? जब उन्होंने परमेश्वर के वचन की घोषणा की थी तो उन्होंने क्या अनुभव किया था? जब मैंने भविष्यवक्ताओं के विषय में लोगों को बात करते हुए पढ़ा और सुना है, तो उनके अनुभव के विषय में कम से कम तीन अवधारणाएं सामने आती हैं। अनेक मसीही भविष्यवक्ताओं की मानसिक दशा को सही तरीके से नहीं समझते। हम उन तरीकों को भी सही नहीं समझते जिनमें परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं के वचनों को प्रेरित किया है। और प्राय: हमारे पास पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को समझने का सही विचार भी नहीं होता कि उन्होंने अपने वचनों से क्या समझा है।

मानसिक दशा

पहली बात तो यह है कि पवित्रशास्त्र के अनेक विद्यार्थी ऐसा दर्शाते हैं कि जब भविष्यवक्ताओं को भविष्यवाणियां प्राप्त हुईं तो वे अपने मानसिक संतुलन में नहीं थे। भविष्यवक्ता परमेश्वर के आत्मा से इतने भरे हुए थे कि उन्होंने अपने होश ही खो दिए थे। वे बाल जैसे कनानी और प्राचीन एवं आधुनिक जगत के भविष्यवक्ताओं के समान बेसुध अवस्था में चले गए थे।

भविष्यवक्ताओं के विषय में यह अनुमान चाहे कितना भी फैला हुआ क्यों न हो, परन्तु यह पवित्रशास्त्र के प्रमाणों से मेल नहीं खाता। मैं सोचता हूँ कि हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि ऐसे कई समय थे जब उन्होंने परमेश्वर की ओर से जो देखा और सुना उससे वे चकित रह गए थे। हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि यहेजकेल अध्याय 8 में वह किस प्रकार की मानसिक दशा में रहा होगा, परमेश्वर के आत्मा ने उसे उसके बालों से पकड़ा और उसे बेबीलोन से लेकर यरूशलेम के मन्दिर तक सैंकड़ों मील लेकर गया। परन्तु इस स्थिति में भी यहेजकेल अपने आपे से बाहर नहीं था। उसने अपना संतुलन नहीं खोया। इसकी अपेक्षा, जब हम यहेजकेल की पुस्तक के इस भाग को पढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि वह अपने विवेक के साथ परमेश्वर से वार्तालाप कर पाया। नाटकीय परिस्थितियों में पुराने नियम के भविष्यवक्ता सचेत और चौकस रहे जब परमेश्वर ने अपना वचन उनके समक्ष प्रकट किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरणा

भविष्यवक्ता के अनुभव के विषय में फैली हुई दूसरी गलतफहमी उन तरीकों के बारे में है जिनमें उन्हें परमेश्वर से प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

यांत्रिक प्रेरणा

दुर्भाग्यवश, अनेक मसीही पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को ऐसे देखते हैं जैसे कि वे यांत्रिक रूप से प्रेरणा पाए हुए हों। हम भविष्यवक्ताओं से ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि वे सुनकर बोलने वाली मशीने हों। जब यशायाह ने बोला, उसने मुश्किल से ही परमेश्वर को अनुमति दी कि वह उसके होठों को हिलाएं। जब आमोस ने प्रचार किया तो परमेश्वर ने उसके मुख से हर एक शब्द निकाला। बाइबल के दूसरे भागों के विषय में इस प्रकार से सोचना हम बेहतर जानते हैं, परन्तु जब पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की बात आती है तो हम प्राय: उनसे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि वे प्रकाशन के निर्जीव साधन या परमेश्वर के यांत्रिक प्रवक्ता हैं।

सचेत प्रेरणा

प्रेरणा को देखने के इस प्रचलित तरीके के विरोध में इन अध्यायों में हम “सचेत चेतना” के दृष्टिकोण का प्रयोग करेंगे। हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा ने भविष्यवक्ताओं के लेखनों को प्रेरित किया ताकि उनमें कोई गलतियां न हों। परन्तु इसके साथ-साथ हम यह भी जानते हैं कि जब परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के वचनों को प्रेरित किया तो उसने व्यक्तित्वों का और मानवीय लेखकों के विचारों और दृष्टिकोणों का इस्तेमाल किया। नए नियम में हम जानते हैं कि यह सत्य है। पौलुस की पत्रियां उसके व्यक्तित्वों और उसकी पृष्ठभूमि को दर्शाती हैं। और हम यह भी पहचान लेते हैं कि चार सुसमाचारों के बीच की भिन्नताएं मुख्यत: मानवीय लेखकों के अभिप्रायों और लक्ष्यों की भिन्नताओं का ही परिणाम है। लगभग इसी प्रकार परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को प्रेरित करते हुए उनके व्यक्तित्वों, अनुभवों और अभिप्रायों का इस्तेमाल किया। यदि हम पुराने नियम की भविष्यवाणी को समझने की आशा करते हैं तो हमें उनके अनुभव की यांत्रिक समझ को खारिज करना होगा और संपूर्ण, विचारधारा वाले मनुष्यों के रूप में परमेश्वर से प्रेरणा पाने के रूपों को ढूंढ़ना होगा।

समझना

भविष्यवक्ताओं के अनुभव के विषय में हमारी दूसरी गलतफहमियों के साथ-साथ हमारे पास इस बात का भी अच्छा ज्ञान नहीं है कि भविष्यवक्ताओं ने उनके अपने शब्दों को कैसे समझा था। वास्तव में, अधिकांश मसीही ऐसा मानते हैं जैसे कि भविष्यवक्ता अज्ञानी थे या उसे समझ पाने में अयोग्य थे जो वे कह रहे थे। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई आमोस को रोककर पूछे, “तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?” अधिकांश मसीही सोचते हैं कि आमोस ने इस प्रकार से उत्तर दिया होता : “मुझे नहीं पता कि मैं क्या कह रहा हूँ : मैं तो बस वही कहता हूँ जो परमेश्वर मुझे कहने को कहता है।”

इस गलतफहमी के विपरीत बाइबल सिखाती है कि भविष्यवक्ता इसे समझते थे। जो वे कहते थे उसे समझते थे। उदाहरण के तौर पर, दानिय्येल 12:8 में दानिय्येल ने इस बात को अंगीकार किया।

> यह बात मैं सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा (दानिय्येल 12:8)

परन्तु हमें पहचानने में सचेत रहना होगा कि दानिय्येल के कहने का अर्थ क्या था। जब वह प्रभु से बात कर रहा था तो उसने अपनी बात को स्पष्ट किया था।

> हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्तफल क्या होगा? (दानिय्येल 12:8)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह देखें, दानिय्येल ने जो सुना और लिखा था वह समझ गया था; उसे शब्दों का पता था, उसे व्याकरण पता थी- ये उसके शब्द थे। परन्तु वह सब कुछ नहीं समझा था। उसने इस बात को मान लिया था कि उसे पूरी तरह से यह नहीं पता था कि भविष्यवाणी कैसे पूरी होगी।

1पतरस 1:11 हमें बताता है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भी इसी प्रकार समझा था, परन्तु वे उन बातों को पूरी तरह से नहीं समझे थे जो सब उन्होंने कहा था। वहां पतरस कहता है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने

> इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, . . . वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था (1पतरस 1:11)

दूसरे शब्दों में कहें तो, पतरस ने कहा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ता समय और परिस्थितियों के विवरण से अनजान रहे, परन्तु उसने ऐसा बिल्कुल नहीं कहा कि वे अपने शब्दों को समझ नहीं पाए। इसके विपरीत, जैसा कि हम देखेंगे, भविष्यवक्ता जो वे कह रहे थे उसके बारे में जानते थे और उन्हें उसका ज्ञान था। अनजान होने की अपेक्षा परमेश्वर के मार्गों के विषय में उनके पास असीम ज्ञान था।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अनुभव के विषय में अनेक गलत धारणाएं हैं, हमने केवल तीन के बारे में बात की है : मानसिक दशा, उनकी प्रेरणा और भविष्यवाणियों के प्रति उनकी समझ। और यदि हम कभी भविष्यवाणियों को सटीक रूप से समझने की आशा करते हैं तो हमें यह सदैव याद रखना होगा कि वे मानसिक रूप से ज्ञानवान थे, उन्हें सचेत रूप में प्रेरणा प्राप्त थी और जो कुछ भी वे कहते थे उसके विषय में अधिकांश बातें वे अच्छी तरह से जानते थे।

भविष्यवक्ता के अनुभव के विषय में इस जानकारी को मन में रखते हुए अब हम दूसरे आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की ओर मुड़ सकते हैं : भविष्यवाणी के मूल अर्थ का महत्व।

मूल अर्थ

सुधारयुग के समय से ही सुसमाचारवादियों ने सदैव यही माना है कि पहले हमें अनुच्छेद के मूल अर्थ को खोजना और फिर उस मूल अर्थ के अधिकार में स्वयं को समर्पित कर देना आवश्यक है। बाइबल के दूसरे भागों के साथ ऐसा करने में हम खुश होते हैं, परन्तु पुराने नियम की भविष्यवाणी के संदर्भ में हम इस मूलभूत व्याख्यात्मक सिद्धांत को भूल जाते हैं। इसे हम कैसे खोजते हैं, हमें दो भिन्न विषयों को देखना है : पहला, व्याख्या करने की प्रचलित विधियां, और फिर पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की व्याख्या करने की सही विधि। आइए पहले हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के मूल अर्थ को खोजने की प्रचलित विधियों को देखें।

प्रचलित व्याख्या

आज जहां कहीं भी आप जाते हैं, बहुत से गंभीर मसीही भी भविष्यवक्ताओं के मूल अर्थ के साथ उनकी व्याख्या नहीं करते हैं। इन प्रचलित धारणाओं को कम से कम दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है- वे हैं, परमाणविक और गैरऐतिहासिक।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमाणविक

इसका अर्थ क्या है जब हम कहते हैं कि प्रचलित व्याख्या परमाणविक है? मसीहियों के लिए यह एक आम बात है कि वे भविष्यवक्ताओं को आपस में अविभाजित संकलनों के रूप में पढ़ते हैं। भविष्यवाणी की पुस्तक के बड़े अनुच्छेदों के माध्यम से पढ़ने की अपेक्षा हम सामान्यत: किसी वाक्यांश या विशेष शब्द पर ध्यान देकर संतुष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी, कुछ ही पदों पर ध्यान दिया जाता है, परन्तु वे तो उस बड़े संदर्भ के विषय में है जैसे कि अधिकांश मसीही सोचते हैं जब वे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की व्याख्या करने की परमाण्विक विधि लाभकारी सिद्ध नहीं होती।

गैरऐतिहासिक

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिकांश सुसमाचारिक लोग भी भविष्यवक्ताओं के ऐतिहासिक संदर्भ को महत्व नहीं देते। वे मानवीय लेखक पर ध्यान नहीं देते और वे परिस्थितियों और पुराने नियम की भविष्यवाणियों के मूल श्रोताओं पर भी विचार नहीं करते।

इसकी अपेक्षा भविष्यवाणियों को इस प्रकार समझा जाता है जैसे कि वे ख़ाली कनस्तर हों जिन्हें अर्थ से भरा जाना हो। हम उस मूल अर्थ को नहीं ढूंढ़ते जो पहले से उस कनस्तर में भरे हुए हैं। इसकी अपेक्षा, हम हमारे समय की घटनाओं को देखते हुए हमारे ही अर्थ प्रदान कर देते हैं। हम वह देखते हैं जो हमारे संसार में हो रहा है और हम भविष्यवाणी के ख़ाली कनस्तरों को वर्तमान, ऐतिहासिक घटनाओं से भरने का प्रयास करते हैं।

मुझे याद है जब मैं यूरोप में एक बहुत ही अच्छी कलीसिया में सिखा रहा था, और प्रश्नोत्तर के समय के दौरान पीछे बैठे एक व्यक्ति ने अपना हाथ खड़ा किया और कहा, “क्या आप सोचते हैं कि शेरनोबिल में हुई तबाही अंत समय का चिन्ह है?” तब मैंने अपने अनुवादक की ओर देखा और कहा, “क्या उसने वास्तव में ऐसा कहा है?” और अनुवादक ने कहा “हाँ”- क्योंकि उस व्यक्ति की भाषा में “शेरनोबिल” का अर्थ था “कड़वी वस्तुएं,” और यिर्मयाह अध्याय 23 में “कड़वी वस्तु” का प्रयोग किया गया है और इसे अंत समय के साथ जोड़ा गया है। अब उस व्यक्ति ने क्या किया था? उसे बाइबल में से एक शब्द मिल गया था और उसने उसे अपने अनुभव के साथ जोड़ दिया था, और इसके परिणामस्वरूप उसने उसे अंत समय के एक चिन्ह के रूप में देखा। अत: जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को परमाणविक रूप में और बिना किसी ऐतिहासिक संदर्भ में देखते हैं तो हमें बाइबल में हमारे अपने विचारों को पढ़ने के अतिरिक्त और क्या करना चाहिए?

पुराने नियम की भविष्यवाणी में हमारे अपने अर्थ को ही पढ़ना इसलिए इतना प्रचलित है क्योंकि हम में से अधिकांश इन वचनों को परमाणविक रूप से और लेखक एवं श्रोता के ऐतिहासिक संदर्भ की परवाह किए बिना पढ़ते हैं। जब मूल अर्थ को नजरअंदाज कर दिया जाता है, तो हम इन वचनों में हमारे अपने ही विचारों को पढ़ने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते।

सही व्याख्या

पुराने नियम की भविष्यवाणी की प्रचलित धारणाओं को सुधारने का एकमात्र तरीका इन लेखों के मूल अर्थ को खोजना है। कई बार हमें बस यही करना होगा कि हम व्याख्या के मूलभूत सिद्धांतों को लागू करें जिन्हें हम बाइबल के दूसरे भागों पर लागू करते हैं। व्याकरण-ऐतिहासिक व्याख्या के माध्यम से भविष्यवाणी के मूल अर्थ को खोजना जरूरी है। यही वह एक लंगर होगा जो हमें भविष्यवक्ताओं के मुँह में हमारे अपने अर्थों को डालने से रोकेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जैसे कि "व्याकरण-ऐतिहासिक" दर्शाता है, मूल अर्थ को खोजने के लिए हमें दो तत्वों पर ध्यान देना जरूरी है। पहला, हमें भविष्यवाणी के व्याकरण पर ध्यान देना है, और ऐसा करने के लिए हम साहित्यिक संदर्भ पर ध्यान देते हैं। और दूसरा, हमें मूल लेखक और मूल श्रोता के ऐतिहासिक संदर्भ पर ध्यान देना होगा।

साहित्यिक संदर्भ

जैसा कि हम इन अध्यायों में देखेंगे, यह पर्याप्त नहीं है कि हम यहां वहां एक या दो शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें, जैसा कि प्रचलित परमाणविक धारणाएं करती हैं। हमें यह सीखना होगा कि हम बड़े अनुच्छेदों, पदों और अध्यायों, पुस्तक के भागों और यहां तक कि भविष्यवाणी की पुस्तकों की व्याख्या किस प्रकार करें।

उदाहरण के तौर पर हमारी रूचि यशायाह 7:14 की प्रसिद्ध भविष्यवाणी में हो सकती है :

> एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी (यशायाह 7:14)

मसीही प्राय: कुछ मुख्य शब्दों पर ध्यान देकर संतुष्ट हो जाते हैं- "कुंवारी" और "बालक," और जब वे ऐसा करते हैं तो वे बड़ी राहत महसूस करते हैं कि वे समझ चुके हैं कि इस अनुच्छेद का क्या अर्थ है।

यशायाह 7:14 के विषय में इस विधि से हम चाहे जितनी भी राहत महसूस करें, परन्तु इस अनुच्छेद के प्रति उत्तरदायी होने के लिए हमें इन कुछ मुख्य शब्दों से बाहर निकलकर संपूर्ण संदर्भ को ध्यान में रखना होगा। यह पद यशायाह 7 में किस प्रकार उपयुक्त बैठता है? और यह यशायाह की पुस्तक के इस भाग में किस प्रकार उपयुक्त बैठता है? और यह यशायाह की पुस्तक के संपूर्ण उद्देश्य और अर्थ में किस प्रकार योगदान देता है? यह तभी होगा जब हम इस पद को इसके विशल संदर्भ में रखेंगे, तभी हम आश्वस्त हो पाएंगे कि हमने इसे सही तरीके से समझ लिया है।

ऐतिहासिक संदर्भ

भविष्यवाणी के विशालतम साहित्यिक संदर्भ पर ध्यान देने के अतिरिक्त भविष्यवाणियों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ने में उनकी सही व्याख्या भी शामिल होती है। हमें लेखक और श्रोता के बारे में सोचना भी जरूरी है। जब अधिकांश मसीही भविष्यवाणियों को पढ़ते हैं तो वे ऐसा मानते हैं जैसे कि ये वचन समयरहित आकाश में तैर रहे हों। परन्तु व्याकरण-ऐतिहासिक व्याख्या हमसे मांग करती है कि हम इन भविष्यवाणियों को पुन: धरती पर लाएं। हम इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं : इन शब्दों को किसने लिखा? वे कब लिखे गए थे? ये किसके लिए लिखे गए थे? और ये शब्द क्यों लिखे गए थे?

उदाहरण के तौर पर, यशायाह 7:14 पर ध्यान देते हुए हमें इसे आकाश में तैरते हुए उन शब्दों के समूह के रूप में नहीं सोचना चाहिए जो यीशु के जन्म के समय धरती को छूते हैं। हमें इस पद को धरती पर लाना जरूरी है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हम वह अनुच्छेद पढ़ रहे हैं जो बताता है कि यशायाह यहूदा के राजा अहाज से बात कर रहा है। और फिर हमें ऐसे प्रश्न पूछने हैं : यशायाह ने ये शब्द अहाज से क्यों कहे थे? उनकी परिस्थितियां क्या थीं? उसका उद्देश्य क्या था? और इस ऐतिहासिक व्यवस्था पर ध्यान देने के द्वारा ही हम इस अनुच्छेद को सही रूप में समझने की आशा कर सकते हैं।

अत: हम देखते हैं कि हमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की व्याख्या करने की प्रचलित धारणाओं, परमाणविक और गैरऐतिहासिक, को ठुकराना है, और इसकी अपेक्षा हमें व्याकरण-ऐतिहासिक व्याख्या के द्वारा मूल अर्थ को खोजने के लिए कड़ी मेहनत करनी है। एक बार जब हम किसी भविष्यवाणी के मूल अर्थ को समझ लेते हैं तो हम एक मजबूत जोड़ को प्राप्त कर लेते हैं जो हमें समझने में सहायता करता है कि आज भविष्यवाणी को कैसे लागू किया जाए।

अब तक हमने दो बातों को देखा है जिनको हमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के प्रति हमारे असमंजस पर विजय पाने के लिए सीखना जरूरी है : भविष्यवक्ता का अनुभव और मूल अर्थ का महत्व। अब हमें तीसरी बात की ओर मुड़ना है जिसमें हमें ध्यान देने की जरूरत है- भविष्यवाणी के विषय में नए नियम के दृष्टिकोण।

नए नियम के दृष्टिकोण

जब हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के नए नियम के दृष्टिकोणों को देखते हैं तो बहुत से विषय सामने आते हैं। हम इस विषय की ओर आने वाले अध्यायों में मुड़ेंगे, परन्तु इस बिन्दू पर नए नियम के दृष्टिकोणों के दो पहलुओं पर ध्यान देना सहायक होगा : पहला, भविष्यवक्ताओं के अधिकार पर नए नियम का दृष्टिकोण : और दूसरा, वे तरीके जिनमें नए नियम ने पुराने नियम की भविष्यवाणी को लागू किया।

अधिकार

यीशु और नए नियम के प्रेरितों ने प्राय: दिखाया है कि वे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अधिकार से पूर्णत: आश्वस्त थे। उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं के लेखनों का इस्तेमाल इस प्रकार किया जैसे कि उनमें पूर्ण अधिकार हो, और उन्होंने भविष्यवक्ताओं के अभिप्रायों को भी आधिकारिक रूप में इस्तेमाल किया।

भविष्यवक्ताओं के लेख

पहली बात तो यह है कि यीशु और उसके चेलों ने भविष्यवक्ताओं के पवित्र वचनों के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि की। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु अपने समय में बाइबल पर आधारित यहूदी धर्म की शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहा। निसंदेह, उस समय यहूदी धर्म की मुख्य शिक्षा इब्रानी बाइबल में परम अधिकार होने की थी, और इसलिए यीशु ने बार-बार इस बात की पुष्टि की कि उसकी सेवकाई पुराने नियम के पवित्र वचनों के अनुरूप थी। उदाहरण के तौर पर मत्ती 5:17 में स्वयं यीशु ने कहा था :

> **यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ (मत्ती 5:17)**

यहां पर ध्यान दें कि यहां यीशु ने केवल यही नहीं कहा कि वह मूसा के अधिकार को पहचानता है, परन्तु उसने भविष्यवाणी के लेखनों के अधिकार को भी पहचाना। नए नियम के सभी लेखक इस रीती से मसीह का अनुसरण करते हैं। उन्होंने आधिकारिक वचनों के रूप में भविष्यवक्ताओं का बार-बार उल्लेख किया।

भविष्यवाणिय अभिप्राय

जितना महतपूर्ण यह है कि यीशु और उसके चेले भविष्यवक्ताओं के पवित्र लेखों को प्रिय जानते थे, उतना ही महत्वपूर्ण हमारे लिए यह भी है कि वे भविष्यवक्ताओं के मूल अभिप्रायों के प्रति भी समर्पित थे। नए नियम के लेखक भविष्यवाणी को मनमाने ढ़ंग से नहीं समझते थे। उन्होंने कभी भविष्यवक्ताओं पर

अपने अर्थ नहीं थोपे। इसकी अपेक्षा वे भविष्यवाणी के मूल अर्थ को खोजने पर और फिर उस मजबूत नींव पर निर्माण करने पर पूरा ध्यान देते थे।

आज के समय में लोगों के लिए यह सोच लेना काफी प्रचलित है कि नए नियम के लेखकों के पास परमेश्वर के द्वारा दिया गया यह अधिकार था कि वे पुराने नियम की मनमाने रूप में व्याख्या कर सकते थे। परन्तु सच्चाई से परे कुछ नहीं हो सकता। नए नियम से लिए गए दो अनुच्छेद हमें दिखाएंगे कि नए नियम के लेखक पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के मूल अर्थों पर कितना ध्यान देते थे।

हम प्रेरितों के काम 2:29-31 में स्वयं पतरस द्वारा स्पष्ट किए गए तरीकों में भविष्यवक्ताओं के अभिप्रायों के प्रति गहरे समर्पण को देख सकते हैं। भजन 16 के एक हिस्से को उद्धृत करने के बाद पद 29 में पतरस यह कहता है :

> हे भाइयो, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। सो भविष्यवक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा। उस ने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की (प्रेरितों के काम 2:29-31)

ध्यान दीजिए कि पतरस ने भजन 16 में अपने मसीही विचारों को पढ़ने के किसी अधिकार का दावा नहीं किया। इसके विपरीत उसने दाऊद के भविष्यवाणिय शब्दों की व्याख्या दाऊद के अनुभव और दाऊद के अभिप्रायों के प्रकाश में की।

लगभग इसी प्रकार प्रेरित यूहन्ना ने भी भविष्यवाणी के मूल अर्थ के साथ गंभीरता को प्रकट किया। यूहन्ना 12:39-40 में यूहन्ना यशायाह 6 की भविष्यवाणियों का उल्लेख करता है। सुनें वह क्या कहता है :

> यशायाह ने फिर भी कहा, कि उस ने उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि वे आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं (यूहन्ना 12:39-40)।

यूहन्ना ने यशायाह से लिए इस अनुच्छेद को यीशु की सेवकाई पर लागू किया। परन्तु सुनिए वह किस प्रकार अपनी व्याख्या को वैध ठहराता है। अगले ही पद, यूहन्ना 12:41, में वह भविष्यवक्ता के अभिप्रायों पर ध्यान देता है।

> यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं कि उस ने उस की महिमा देखी; और उस ने उसके विषय में बातें की (यूहन्ना 12:41)।

0 2 6 यूहन्ना ने यशायाह के अनुभव और किस प्रकार यशायाह चाहता था कि उसके शब्दों को समझा जाए, पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। यूहन्ना ने यशायाह की भविष्यवाणी को इस प्रकार नहीं लिया जैसे कि वह उसके अपने लक्ष्यों के लिए सुविधाजनक हों। इसकी अपेक्षा उसने स्वयं को भविष्यवक्ता के मूल रूप से प्रेरित अभिप्रायों के प्रति समर्पित कर दिया।

मसीही होने के नाते हमें नए नियम के लेखकों के उदाहरण का अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए। हमें पुराने नियम के भविष्यवाणिय लेखन को केवल आधिकारिक रूप में देखना ही नहीं बल्कि हमें इन भविष्यवाणियों के पीछे छिपे मूल अर्थ को खोजने का प्रयास भी करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रयोग

अब जैसे यीशु और नए नियम के लेखकों के लिए भविष्यवाणी का मूल अर्थ महत्वपूर्ण था, परन्तु उन्होंने मूल अर्थ को दोहराया नहीं। इसकी अपेक्षा, मसीह और उसके अनुयायी परमेश्वर द्वारा उनके दिनों में किए गए कार्यों के प्रति भविष्यवाणी के शब्द को प्रयोग करने में समर्पित रहे। यह देखने के लिए कि प्रयोग की इस प्रक्रिया ने किस प्रकार कार्य किया, हमें दो विचारों पर ध्यान देना होगा : पहला, भविष्यवक्ताओं ने भविष्य की किस प्रकार की अपेक्षाओं को प्रस्तुत किया? और फिर नए नियम के लेखकों ने इन अपेक्षाओं की पूर्णता को किस प्रकार देखा?

भविष्यवाणिय अपेक्षाएं

इन सारे अध्यायों में हम उन आशाओं और अपेक्षाओं के प्रकारों का वर्णन करेंगे जो पुराने नियम ने भविष्य के बारे में बताए थे, परन्तु अभी हम नए नियम के दृष्टिकोण की आरंभिक जानकारी देने के लिए सामान्य रूप में बात करेंगे। सरल रूप में कहें तो, भविष्यवक्ता जानते थे कि पाप ने जगत में बरबादी पैदा कर दी है। परमेश्वर के लोग भी इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि परमेश्वर ने उनको बंधुआई में भेज दिया है। परन्तु पाप के इन भयानक परिणामों के बावजूद भविष्यवक्ताओं ने उस समय की अपेक्षा की जब परमेश्वर इन सब बातों को सही कर देगा। यह भविष्य दुष्ट के लिए अनन्त दण्ड और विश्वासयोग्य के लिए अनन्त आशीष का समय होगा। भविष्यवक्ताओं के पास वे सब शब्द थे जिनका इस्तेमाल उन्होंने मानवीय इतिहास के अन्त का वर्णन करने के लिए किया। उन्होंने इसे “प्रभु का दिन” कहा। उन्होंने इसे “अन्त के दिन” कहा। यह महान भविष्य ऐसा समय होगा जब परमेश्वर संसार में हस्तक्षेप करेगा और सब चीजों को उनके अंत में पहुंचाएगा।

भविष्यवाणिय पूर्णता

अब नए नियम में पुराने नियम की इन अपेक्षाओं को क्रियान्वित करने के विशेष तरीके थे। हमें यह देखने की जरूरत है कि उन्होंने मसीह में इन आशाओं की पूर्णता को कैसे समझा। यीशु और प्रेरितों के दिनों में अनेक इस्राएलियों ने अपेक्षा की थी कि न्याय का दिन बहुत जल्दी आने वाला था। वे मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे जो मानवीय इतिहास को इसके अंत में लेकर जाएगा। और एक शब्द में, मसीहियों ने यीशु को मसीहा के रूप में और इसलिए भविष्यवाणिय आशाओं की पूर्णता के रूप में ग्रहण किया। यीशु पुराने नियम की भविष्यवाणी के मसीही ज्ञान का व्याख्यात्मक केन्द्र बन गया।

स्वयं यीशु ने बल दिया कि भविष्यवक्ताओं की व्याख्या मसीह-केन्द्रित होनी चाहिए। उसने तब व्याख्या के मसीह-केन्द्रित होने के महत्व पर बल दिया जब वह इम्माउस के मार्ग पर अपने चेलों से बात कर रहा था। लूका 24:25-26 में यीशु ने ये शब्द कहे :

> हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे? (लूका 24:25-26)

यीशु ने अपने अनुयायियों से अपेक्षा की थी वे उसे पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्णता के रूप में देखें। इसी कारणवश अगला पद लूका 24:27 हमें यह बताता है :

> तब उस ने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया (लूका 24:27)

ध्यान दें, लूका इसे किस प्रकार दर्शाता है- यीशु ने स्पष्ट किया कि सारे भविष्यवक्ताओं ने उसके बारे में बात की है। अत: नए नियम के लेखकों ने भविष्यवाणी की मूल अपेक्षाओं के महत्व की पुष्टि की। परन्तु उन्होंने इन भविष्यवाणिय अपेक्षाओं को मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के साथ भी जोड़ा।

मूल रूप से, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने आशा के एक मार्ग, अपेक्षा के एक मार्ग को स्थापित किया। एक बड़े दण्ड और आशीष का एक आगामी समय आने वाला था। अब नया नियम उस मार्ग को लेता है और भविष्य में उसे खोजता है और यीशु के पहले आगमन में, आज उसके राज्य में और महिमा में यीशु के पुनरागमन के समय संसार के अंत में उसकी पूर्णता को पाता है।

जैसे कि हम अध्यायों की इस श्रंखला में आगे देखेंगे, नया नियम स्पष्ट करता है कि मसीह ने अपने राज्य के इन तीनों चरणों में पुराने नियम की भविष्यवाणिय अपेक्षाओं को पूर्ण किया : उसने अपने राज्य के आरंभिक चरण, दो हजार वर्ष पूर्व इस संसार में की गई उसकी सेवा, में बहुत कुछ पूरा किया। वह कलीसिया के सारे इतिहास के दौरान अपने राज्य की निरंतरता में पुराने नियम की अपेक्षाओं को निरंतर पूरा करता है। और अंत में, मसीह उन सारी भविष्यवाणियों को संपूर्ण पूर्णता में लेकर आएगा जब वह पुन: आएगा और अपने राज्य को पूर्ण रूप से स्थापित करेगा। मसीह के कार्य के इन तीन चरणों ने नए नियम के लेखकों को एक व्याख्यात्मक नमूना प्रदान किया, और इस नमूने के द्वारा वे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की सारी अपेक्षाओं और आशाओं को अपने समय में लागू कर सके।

मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें भी यह सीखना जरूरी है कि हम पुराने नियम की अपेक्षाओं को कैसे लें और उन्हें मसीह के पहले आगमन, उसके राज्य की निरंतरता और मसीह के द्वितीय आगमन पर कैसे लागू करें।

उपसंहार

इस परिचयात्मक अध्याय में हमने चार विषयों को छुआ है जो हमारे पुराने नियम की भविष्यवाणी के सारे अध्ययन को निर्देशित करेगा। हमें तीन आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों पर ध्यान देने के द्वारा बाइबल के इस भाग पर होने वाले असमंजस पर विजय प्राप्त करनी है : हमें भविष्यवक्ताओं के अनुभव को जानना है, और हमें भविष्यवाणी के मूल अर्थ के महत्व की पुन: पुष्टि करनी है। और फिर हमें यह सीखना है कि हम भविष्यवाणी के नए नियम के दृष्टिकोणों का अनुसरण किस प्रकार करें।

आगामी अध्याय में हम इन तीन आवश्यक व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों को और अधिक खोजने का प्रयोग करेंगे। पहला, हम भविष्यवक्ता के अनुभव पर ध्यान देंगे, और फिर हम मूल अर्थ के महत्व पर ध्यान देंगे। और फिर अंत में, हम और भी अधिक गहराई से इस बात की जांच करेंगे कि नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की भविष्यवाणी का प्रयोग कैसे किया है। जब हम इन भिन्न-भिन्न विषयों को देखते हैं तो हम भविष्यवाणी के एक परिदृश्य को पाएंगे जो कलीसिया को बढ़ाएगी और हमारे परमेश्वर को महिमा देगी।